



श्री बगडिया के फार्म में 150 आंवलों के वृक्षों से औसतन एक क्विंटल प्रति वृक्ष से 150 क्विंटल आंवले की उपज प्राप्त होती है। साधारणतया आंवला बिक्री से जहां वर्ष 2012-14 तक इनको 1.0 से 1.5 लाख रुपये की ही आय प्राप्त हो पाती थी वहीं अब वर्ष 2019-20 से आंवला प्रसंस्करण से औसतन 12 से 15 लाख रुपये वार्षिक आमदनी होने लगी है। श्री बगडिया के अनुसार वर्तमान में इस आंवला प्रसंस्करण इकाई से 8-9 लाख रुपये प्रति वर्ष शुद्ध आय प्राप्त हो रही है।

आंवला प्रसंस्करण से कमाई

बी.एल. आसीवाल*, महेश चौधरी* और लालाराम*

यह सफलता की कहानी कृषक श्री भंवर लाल बगडिया की है, जो राजस्थान के सीकर जिले की धोद पंचायत समिति के सरवडी गांव के निवासी हैं। इनके गांव में ज्यादातर किसान सरसों, गेहूं, प्याज, मूंगफली, ग्वार इत्यादि फसलों की खेती करते हैं। इन्हें परम्परागत तरीके से खेती से इतनी कम आमदनी हो पाती थी कि घर का खर्चा चलाना भी मुश्किल हो रहा था।

मीठी कैण्डी, आंवला चूर्ण, अचार, मुरब्बा, फाकों वाला मुरब्बा आदि के बारे में जानकारी प्रदान की। वैज्ञानिकों की सलाहानुसार श्री बगडिया ने अपने फार्म पर “दक्षिता आंवला मुरब्बा, सरवडी के नाम से आंवला प्रसंस्करण इकाई” का शुभारम्भ वर्ष 2014 में कर दिया। उनका कहना है कि आज आंकलन करता हूं तो पाता हूं कि जो आंवला बाजार में 8 से 10 रुपये प्रति किलोग्राम विक्रय हो पाता था वही आज प्रसंस्करण के पश्चात 100 से 150 रुपये प्रति किलोग्राम विक्रय हो रहा है। इस प्रकार अब से 12-13 लाख रुपये तक आमदनी प्राप्त करने में सफलता हासिल की।



श्री भंवर लाल बगडिया

श्री बगडिया जी इसके अतिरिक्त गांव की 4-5 महिलाओं एवं दो युवाओं को वर्षपर्यन्त रोजगार भी उपलब्ध करवा रहे हैं। श्री बगडिया अपनी प्रसंस्करण इकाई को विस्तृत रूप देने में बेर, बेल आदि के प्रसंस्करण हेतु भी अपना ज्ञान एवं रुचि बढ़ा रहे हैं। कोविड-19 के दौरान आम जनता में आंवले के महत्व के प्रति जागरूकता से उनके आंवले के उत्पाद हाथों हाथ विक्रय हो रहे हैं।

मार्गदर्शन से आज एक सफल उद्यमी के रूप में श्री भंवर लाल ने अपनी पहचान बना ली है। वर्ष 2008 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर द्वारा इनके गाँव सरवडी(जिला-सीकर) में चना एवं गेहूं फसल के प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों के दौरान कृषि वैज्ञानिकों से श्री भंवर लाल बगडिया (55 वर्ष) का सपर्क हुआ। उनकी पढ़ाई मात्र आठवीं तक की है और उनके पास 2.5 हैक्टर भूमि है। केन्द्र द्वारा गांव में विभिन्न प्रशिक्षण जैसे पशुपालन,

जैविक खेती, फल एवं सब्जी, फसल उत्पादन इत्यादि आयोजित किए गये।

तकनीकी में बदलाव: श्री बगडिया की रुचि फलदार पौधे लगाने तथा जैविक खेती में अधिक होने के कारण इन्होंने वर्ष 2008 में एक हैक्टर में उद्यान विभाग के सहयोग से आंवला, बेर तथा बेल का बगीचा तैयार किया। इन्होंने बताया कि शुरूआती दौर में तो आंवला के फलों की बिक्री सम्बन्धी कई समस्याओं का सामना करना पड़ा था, लेकिन एक दिन केवीके वैज्ञानिकों द्वारा छोटी इकाई शुरू करने के सुझाव ने तत्काल ही बदल दी। साथ ही वैज्ञानिकों ने आंवला के फलों से तैयार होने वाले उत्पादों आंवला



तैयार प्रसंस्कृत आंवला उत्पाद

*कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर-शेखावटी, सीकर